ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-247-250, YEAR JUNE 2016

वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

□ डॉ0 राकेश कुमार ओझा

सारांश *– 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में विश्व अर्थव्यवस्था में तीव्र परिवर्तन हुए, जिनके परिणामस्वरूप वैश्वीकरण की प्रक्रिया को व्यापक गति प्राप्त हुई। वैश्वीकरण का अर्थ है: विश्व की अर्थव्यवस्थाओं, बाजारों, तकनीकों, संस्कृतियों तथा व्यापारिक गतिविधियों का आपसी एकीकरण। भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया का वास्तविक प्रारम्भ 1991 की नई आर्थिक नीति के साथ हुआ, जब आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीतियों को अपनाया गया।*

वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अनेक प्रकार से प्रभावित किया। इससे विदेशी निवेश में वृद्धि हुई, व्यापार का विस्तार हुआ, सूचना प्रौद्योगिकी तथा सेवा क्षेत्र का विकास हुआ और भारत वैश्विक बाजार से जुड़ गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन से उत्पादन, तकनीक तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। भारतीय उद्योगों को अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा, जिससे गुणवत्ता सुधार और उत्पादकता में वृद्धि हुई।

हालाँकि वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए। छोटे उद्योगों पर दबाव बढ़ा, कृषि क्षेत्र संकटग्रस्त हुआ, आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई तथा विदेशी पूँजी पर निर्भरता बढ़ी। सांस्कृतिक प्रभावों ने भारतीय परम्पराओं और स्थानीय उद्योगों को भी चुनौती दी।

इसके बावजूद वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया है। वर्तमान समय में भारत सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र, स्टार्टअप संस्कृति तथा विनिर्माण के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। उचित नीतियों और संतुलित विकास के माध्यम से वैश्वीकरण को भारतीय आर्थिक विकास का प्रभावी साधन बनाया जा सकता है।

प्रस्तावना– आधुनिक विश्व में वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में उभरा है। संचार, परिवहन और तकनीकी विकास ने विश्व को एक "वैश्विक गाँव" में परिवर्तित कर दिया है। आज किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पूर्णतः स्वतंत्र नहीं रह गई है, बल्कि वह वैश्विक व्यापार, निवेश और तकनीकी सहयोग से जुड़ी हुई है।

भारत ने स्वतंत्रता के बाद मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया था, जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुख भूमिका थी। प्रारम्भिक दशकों में भारत ने आत्मनिर्भरता और संरक्षणवादी नीतियों को प्राथमिकता दी। परिणामस्वरूप विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए।

1991 में भारत गंभीर भुगतान संतुलन संकट से गुजरा। विदेशी मुद्रा भंडार अत्यंत कम हो गया और आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ गई। इस संकट से उबरने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री P. V. Narasimha Rao तथा वित्त मंत्री Manmohan Singh ने नई आर्थिक नीति लागू की।

इस नीति के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को अपनाया गया। आयात–निर्यात नीतियों में सुधार किए गए, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया गया तथा भारतीय उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए खोला गया।

वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए। यह केवल आर्थिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तन का भी माध्यम बना।

वैश्वीकरण की अवधारणा– वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाएँ व्यापार, निवेश, तकनीक, सूचना और मानव संसाधन के स्तर पर एक–दूसरे से जुड़ी हैं।

अर्थशास्त्रियों के अनुसार वैश्वीकरण के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं:

- अंतरराष्ट्रीय व्यापार का विस्तार
- विदेशी निवेश में वृद्धि
- पूँजी का मुक्त प्रवाह
- तकनीकी हस्तांतरण
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार

असिस्टेंट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र, महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल) गोरखपुर (उ०प्र०) भारत

- वैश्विक बाजार का विकास

वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य विश्व अर्थव्यवस्था को एकीकृत करना तथा संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करना है।

भारत में वैश्वीकरण की पृष्ठभूमि–स्वतंत्रता के बाद भारत ने समाजवादी प्रेरित मिश्रित अर्थव्यवस्था अपनाई थी। सरकार का उद्देश्य आत्मनिर्भरता और घरेलू उद्योगों का संरक्षण था। परिणामस्वरूप आयात पर भारी शुल्क तथा विदेशी निवेश पर नियंत्रण लगाए गए।

1980 के दशक के अंत तक भारत की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी। राजकोषीय घाटा, विदेशी ऋण और भुगतान संतुलन संकट बढ़ गया। 1991 में भारत को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा।

इस संकट के समाधान हेतु अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे International Monetary Fund तथा World Bank से सहायता ली गई। इसके बदले भारत को आर्थिक सुधार लागू करने पड़े।

नई आर्थिक नीति के अंतर्गत– औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली समाप्त की गई। आयात शुल्क कम किए गए। विदेशी निवेश को अनुमति दी गई। सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इसी के साथ भारत वैश्वीकरण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हो गया।

वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव–

1. विदेशी निवेश में वृद्धिः वैश्वीकरण के बाद भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में निवेश करना प्रारम्भ किया।

Google, Microsoft, Amazon तथा Samsung जैसी कंपनियों ने भारत में अपने व्यापार और उत्पादन का विस्तार किया।

FDI के परिणामस्वरूप पूँजी निवेश बढ़ा, रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए, नई तकनीकों का विकास हुआ, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई।

2. औद्योगिक विकासः वैश्वीकरण के कारण भारतीय उद्योगों को अंतरराष्ट्रीय बाजार उपलब्ध हुआ। इससे उत्पादन और प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई।

ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार और औषधि उद्योगों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। भारत वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने लगा।

Tata Motors और Mahindra & Mahindra जैसी भारतीय कंपनियाँ अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा करने लगीं।

3. सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र का विकासः वैश्वीकरण का सबसे बड़ा लाभ भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (IT) क्षेत्र को मिला। भारत विश्व का प्रमुख IT सेवा प्रदाता देश बन गया।

Infosys, Tata Consultancy Services तथा Wipro जैसी कंपनियों ने वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान बनाई।

IT क्षेत्र के विकास से– निर्यात बढ़ा, रोजगार के अवसर बढ़े, विदेशी मुद्रा अर्जित हुई और तकनीकी कौशल का विकास हुआ है।

4. व्यापार में वृद्धिः वैश्वीकरण के बाद भारत के आयात और निर्यात दोनों में वृद्धि हुई। भारतीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार मिलने लगा साथ ही, भारत ने वस्त्र, औषधि, इंजीनियरिंग वस्तुओं तथा कृषि उत्पादों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि की।

5. उपभोक्ताओं को लाभः वैश्वीकरण के कारण उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता वाली वस्तुएँ उचित मूल्य पर उपलब्ध होने लगीं।

बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से– उत्पादों की गुणवत्ता सुधरी, कीमतों में कमी आई, उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प मिले।

6. रोजगार के अवसरों में वृद्धिः विदेशी कंपनियों और नए उद्योगों के आगमन से रोजगार के अवसर बढ़े। विशेष रूप से सेवा क्षेत्र, IT, बैंकिंग, बीमा और दूरसंचार में रोजगार सृजित हुए।

7. वित्तीय क्षेत्र का आधुनिकीकरणः वैश्वीकरण के कारण भारतीय बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में सुधार हुए। आधुनिक बैंकिंग प्रणाली, डिजिटल भुगतान तथा पूँजी बाजार का विकास हुआ।

National Stock Exchange तथा Bombay Stock Exchange जैसे संस्थानों ने वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा बढ़ाई।

वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव–

1. छोटे उद्योगों पर प्रभावः वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे और कुटीर उद्योगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की पूँजी और तकनीकी क्षमता के सामने छोटे उद्योग कमजोर पड़ गए।

कई पारंपरिक उद्योग जैसे हस्तशिल्प, हथकरघा और ग्रामीण उद्योग प्रभावित हुए।

2. कृषि क्षेत्र पर प्रभावः वैश्वीकरण का कृषि क्षेत्र पर मिश्रित प्रभाव पड़ा। एक ओर कृषि निर्यात के अवसर बढ़े, वहीं दूसरी ओर किसानों को वैश्विक मूल्य प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। बीज, उर्वरक और कृषि तकनीक पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की निर्भरता बढ़ी। किसानों की लागत में वृद्धि हुई।

3. आर्थिक असमानता में वृद्धिः वैश्वीकरण के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच सके। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच आय असमानता बढ़ी। कुशल और शिक्षित वर्ग को अधिक लाभ मिला, जबकि असंगठित क्षेत्र के श्रमिक अपेक्षाकृत पीछे रह गए।

4. विदेशी पूँजी पर निर्भरताः विदेशी निवेश पर अत्यधिक निर्भरता आर्थिक जोखिम उत्पन्न कर सकती है। वैश्विक आर्थिक मंदी का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है।

2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी इसका प्रमुख उदाहरण है।

5. सांस्कृतिक प्रभावः वैश्वीकरण के कारण पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीय समाज पर बढ़ा। उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक परिवर्तन ने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती दी।

स्थानीय भाषाओं, हस्तशिल्प और पारंपरिक उद्योगों पर भी प्रभाव पड़ा।

6. श्रमिकों का शोषणः कुछ क्षेत्रों में सस्ते श्रम का उपयोग कर श्रमिकों का शोषण हुआ। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों को पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा नहीं मिल सकी।

वैश्वीकरण और भारतीय कृषि– भारतीय कृषि वैश्वीकरण से अत्यधिक प्रभावित हुई। WTO समझौतों के कारण कृषि व्यापार का अंतरराष्ट्रीयकरण हुआ।

कृषि क्षेत्र में– निर्यात के अवसर बढ़े, नई तकनीक आई, उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई, लेकिन दूसरी ओर– उत्पादन लागत बढ़ी, किसानों की आय में अस्थिरता आई, विदेशी कंपनियों की निर्भरता बढ़ी है, साथ ही कृषि संकट और किसानों की समस्याएँ आज भी एक महत्वपूर्ण चुनौती हैं।

वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति– वैश्वीकरण केवल आर्थिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है। मीडिया, इंटरनेट और मनोरंजन उद्योग के माध्यम से वैश्विक संस्कृति का प्रभाव बढ़ा। फास्ट फूड संस्कृति, उपभोक्तावाद और जीवनशैली में परिवर्तन इसके उदाहरण हैं।

हालाँकि भारतीय संस्कृति ने भी वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। योग, आयुर्वेद, भारतीय भोजन और बॉलीवुड विश्वभर में लोकप्रिय हुए हैं।

वैश्वीकरण और शिक्षा– वैश्वीकरण ने शिक्षा क्षेत्र में भी परिवर्तन लाया। तकनीकी शिक्षा का विस्तार हुआ, विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग बढ़ा, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षण विकसित हुआ। अंग्रेजी भाषा और तकनीकी कौशल की मांग बढ़ी।

कोविड–19 और वैश्वीकरण– कोविड–19 महामारी ने वैश्वीकरण की सीमाओं को उजागर किया। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ बाधित हुईं तथा आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित हुईं।

भारत ने इस दौरान आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को महसूस किया। "आत्मनिर्भर भारत अभियान" इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

वैश्वीकरण और आत्मनिर्भर भारत– वैश्वीकरण का अर्थ पूर्ण निर्भरता नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धात्मक आत्मनिर्भरता है। भारत ने "मेक इन इंडिया", "स्टार्टअप इंडिया" और "डिजिटल इंडिया" जैसी योजनाओं के माध्यम से वैश्वीकरण और आत्मनिर्भरता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है।

भविष्य की संभावनाएँ– भारत विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत के लिए निम्न संभावनाएँ महत्वपूर्ण हैं: डिजिटल अर्थव्यवस्था का विकास, हरित ऊर्जा क्षेत्र में निवेश, सेमीकंडक्टर निर्माण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भूमिका आदि।

यदि भारत शिक्षा, कौशल विकास, आधारभूत संरचना और नवाचार पर ध्यान देता है, तो वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष– वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसने आर्थिक विकास, विदेशी निवेश, तकनीकी प्रगति और रोजगार सृजन को बढ़ावा दिया। सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र और उद्योगों के विकास में वैश्वीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इसके साथ ही छोटे उद्योगों की समस्याएँ, कृषि संकट, आर्थिक असमानता तथा सांस्कृतिक प्रभाव जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए आवश्यक है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया को संतुलित और समावेशी बनाया जाए।

भारत को ऐसी नीतियाँ अपनानी चाहिए जो आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता को भी सुनिश्चित करें। यदि उचित नीति और नियोजन के साथ वैश्वीकरण का लाभ उठाया जाए, तो भारत विश्व अर्थव्यवस्था में एक सशक्त और विकसित राष्ट्र के रूप में उभर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दत्त एवं सुंदरम – भारतीय अर्थव्यवस्था
2. मिश्रा एवं पुरी – भारतीय अर्थव्यवस्था
3. रमेश सिंह – भारतीय अर्थव्यवस्था
4. अमर्त्य सेन – Development as Freedom
5. भारत सरकार कृ आर्थिक सर्वेक्षण
6. नीति आयोग रिपोर्ट
7. worldbank.org
8. im.org
9. finmin.nic.in
10. niti.gov.in

*****